

आम की प्रूनगि का परमटि रद्द

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के किसानों को [आम के वृक्षों](#) की छँटाई/प्रूनगि के लिये किसी भी सरकारी वभिग से अनुमति लेने की आवश्यकता से छूट देने का नरिणय लया।

- आम उत्पादक अपनी उत्पादकता बढ़ाने के लिये पेड़ों की छँटाई कर सकते हैं और उनकी ऊँचाई कम कर सकते हैं।

मुख्य बढि:

- इस नरिणय से पुराने आम के बागों के लिये [कैनोपी प्रबंधन](#) आसान हो गया है। इससे पुराने आम के बागों का कायाकल्प हो जाएगा और वे नए बागों की तरह उत्पादक बन जाएंगे।
 - पुराने बागों में नई पत्तियों और शाखाओं की वृद्धि में कमी आ गई है, जो फूल तथा फल के लिये महत्त्वपूर्ण है।
 - इसके बजाय, मोटी और उलझी हुई शाखाएँ अधिक हैं, जो पर्याप्त प्रकाश को अंदर तक पहुँचने से रोकती हैं।
- इन परस्थितियों के परिणामस्वरूप कीटों और बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है तथा [कीटनाशकों](#) का प्रभावी प्रयोग जटिल हो जाता है।
 - परिणामस्वरूप, छड़िकाव कयि गए कीटनाशक अक्सर पेड़ों के अंदरूनी हिस्सों तक पहुँचने में वफिल हो जाते हैं, जसिसे कीटनाशकों का उपयोग बढ़ जाता है और पर्यावरण प्रदूषण बढ़ जाता है।
- इन समस्याओं से निपटने के लिये [केंद्रीय उपोषण बागवानी संस्थान \(Central Institute of Subtropical Horticulture- CISH\)](#) ने आम के वृक्षों को पुनर्जीवित करने हेतु एक प्रभावी छँटाई तकनीक विकसित की है।
 - इस विधि को [तृतीयक शाखाओं की छँटाई](#) या टेबल-टॉप प्रूनगि कहा जाता है, जसिसे वृक्ष की कैनोपी खुल जाती है, उसकी ऊँचाई कम हो जाती है तथा स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा मिलता है।
 - इस छँटाई तकनीक (Pruning Technique) से वृक्षों से 2-3 वर्षों में ही 100 किलोग्राम तक उपज प्राप्त की जा सकती है, साथ ही अत्यधिक कीटनाशकों के उपयोग की आवश्यकता भी कम हो जाती है।

केंद्रीय उपोषणकटबिंधीय बागवानी संस्थान (CISH)

- इसे 4 सितंबर, 1972 को [भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरु](#) के तत्वावधान में केंद्रीय आम अनुसंधान केंद्र के रूप में शुरू किया गया था।
- संस्थान, जसिका नाम बाद में 14 जून, 1995 को केंद्रीय उपोषणकटबिंधीय बागवानी संस्थान (Central Institute for Subtropical Horticulture- CISH) रखा गया, उपोषणकटबिंधीय फलों पर अनुसंधान के सभी पहलुओं पर राष्ट्र की सेवा कर रहा है।
- CISH का मुख्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित है।